विगत 20 वर्षों में बैंकों में जमा में सर्वाधिक कमी

[स्रोत: लाइवमिंट]

हाल ही में प्रकाशित एक रिपोर्ट के अनुसार, **ऋण क्षेत्र में तीव्र वृद्धि दर्ज की गई** है, जिससे वर्ष 2023-24 में बैंकों में सबसे कम जमा प्राप्ति हुई है, जिसके परिणामस्वरूप विगत दो दशकों में **ऋण-जमा अनुपात काफी असंतुलित** हो गया है।

जमा प्राप्ति में कमी/ डिपॉज़िट क्रंच क्या है?

- **परिचय:**
  - भारतीय बैंकों को जमा नकदी के संकट का सामना करना पड़ रहा है।
  - वर्तमान में ऋण-जमा अनुपात 80%-20% के साथ वर्ष 2015 के बाद से अपने उच्चतम स्तर पर है।
    - **जमा नकदी का अनुपात यह इंगित करता है कि किसी बैंक का कितना जमा ऋण के लिये प्रयोग किया जा रहा है।**
- **जमा प्राप्ति में कमी:**
  - जमा नकदी का संकट तब उत्पन्न होता है जब बैंकों के पास अपने ग्राहकों को उधार देने के लिये पर्याप्त धनराशि नहीं होती है।
  - परिणामस्वरूप, व्यवसायों के सुचारु संचालन में बाधाएँ उत्पन्न होती हैं, और कर्मचारियों को वेतन प्राप्त करने में देरी होती है।
  - यह आर्थिक स्थिरता और वित्तीय व्यवस्था को बाधित कर सकता है।
- **जमा प्राप्ति में कमी का कारण:**
  - बेहतरीन बाज़ार प्रदर्शन एवं बढ़ती वित्तीय जागरूकता के कारण निवेशक तेज़ी से उच्च-रिटर्न, इक्विटी-लिंक्ड उत्पादों की ओर अधिक उन्मुख हो रहे हैं, जिससे **बैंकों के समक्ष जमा प्राप्त करने और ऋण वृद्धि के समर्थन की दोहरी चुनौती उत्पन्न होती है।**
  - एकत्र की गई जमा राशि के एक हिस्से को नियामक आवश्यकताओं जैसे-[नकद आरक्षित अनुपात (CRR)] तथा [वैधानिक तरलता अनुपात (SLR)] ऋण देने योग्य धन को कम करने एवं जमा के लिये प्रतिस्पर्द्धा को बढ़ाने के लिये अलग रखा गया है।
  - हाल की तिमाही में बैंकों ने धीमी जमा वृद्धि के बीच ऋण को बढ़ावा देने के लिये अपने अधिशेष **SLR होल्डिंग्स का उपयोग** किया, लेकिन जैसे-जैसे SLR बफर्स कम होते हैं, उन्हें लाभप्रदाता के साथ जमा दर में बढ़ोतरी को संतुलित करने की चुनौती का सामना करना पड़ता है।
  - बढ़ती प्रतिस्पर्द्धा, वैकल्पिक निवेश विकल्पों तथा वास्तविक संपत्तियों की ओर बदलाव के बीच खुदरा जमा को आकर्षित करने के लिये बैंकों में **पिछले वित्त वर्ष में जमा दरों में वृद्धि** हुई।
  - [HDFC तथा HDFC बैंक] के **विलय** के परिणामस्वरूप HDFC के ऋण तथा जमा को बैंकिंग प्रणाली में शामिल किया गया, जिसने समग्र आँकड़ों में योगदान दिया।
- **निहितार्थ:**
  - उच्च CD अनुपात से बैंक की महँगी, बड़ी जमाओं पर निर्भरता बढ़ जाती है, जिसकी पूर्ति उसके मुख्य जमाकर्त्ताओं से नहीं हो सकती है और संभावित रूप से **उच्च बहिर्वाह के कारण तरलता जोखिम की स्थिति उत्पन्न** हो सकती है।
  - इससे ऋण तक सीमित पहुँच के कारण **व्यवसायों को तरलता संबंधी चुनौतियों का सामना** करना पड़ सकता है।
  - कर्मचारियों के वेतन में देरी हो सकती है, जिससे उनकी आजीविका प्रभावित हो सकती है।
  - इसका **गंभीर** समग्र **आर्थिक प्रभाव** हो सकता है, जिसके लिये **बैंकिंग क्षेत्र को स्थिर करने हेतु तत्काल उपाय किये जाने की आवश्यकता** है।
- **समाधान:**
  - लगभग 20 वर्षों में सबसे खराब जमा संकट पर तत्काल ध्यान देने के साथ ही रणनीतिक हस्तक्षेप किया जाना आवश्यक है।
  - जैसे-जैसे भारत इस चुनौतीपूर्ण चरण से गुज़र रहा है, हमारे बैंकों की सुरक्षा एवं वित्तीय स्थिरता सुनिश्चित करना सर्वोपरि उद्देश्य बन गया है।
  - इसका समाधान ढूँढने के लिये [RBI] और बैंकों को सहयोग करना होगा।
  - अधिक जमा राशि को प्रोत्साहित करना एवं **ऋण वितरण को प्रभावी ढंग से प्रबंधित** करना महत्त्वपूर्ण कदम हैं।
  - संकट की गंभीरता के बारे में **सार्वजनिक जागरूकता** हमारी बैंकिंग प्रणाली की सुरक्षा के लिये सामूहिक प्रयासों को प्रेरित कर सकती है।

UPSC सिविल सेवा परीक्षा, विगत वर्ष के प्रश्न

[illegible]:

प्रश्न. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये: (2018)

1. भारतीय रिज़र्व बैंक भारत सरकार की प्रतिभूतियों का प्रबंधन और सेवाएँ प्रदान करता है, लेकिन किसी राज्य सरकार की प्रतिभूतियों का नहीं।
2. भारत सरकार कोष-पत्र (ट्रेज़री बिल) जारी करती है और राज्य सरकारें कोई कोष-पत्र जारी नहीं करतीं।
3. कोष-पत्र ऑफर अपने समतुल्य मूल्य से बट्टे पर जारी किये जाते हैं।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1 और 2
(b) केवल 3
(c) केवल 2 और 3
(d) 1, 2 और 3

उत्तर: (c)

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/banks-see-worst-deposit-crunch-in-20-years